# "मूर्तिपूजा" एक वैज्ञानिक मीमांसा

**1. श्रद्धा का आधार** :- किसी व्यक्ति विशेष, महापुरुष, राजा, नेता, गुरु आदि के चित्र अथवा मूर्तियाँ बनाने का चलन प्राचीन काल से चला आया है । ये सभी लोग समाज के प्रतिष्ठित, गणमान्य व्यक्तियों में होने के कारण जनता प्रतीकों के माध्यम से उनके प्रति आदर भाव प्रगट करती रही है । वास्तव में, मूर्ति वह व्यक्ति विशेष तो नहीं है, परन्तु उस व्यक्ति की प्रतिकृति होने के कारण समान रूप से आदर एवम् श्रद्धा भाव से पूजनीय है तथा अपने पूज्य के प्रति आदर एवम् श्रद्धा प्रगट करने की यह सरलतम विधि भी है । इसी प्रकार इस सृष्टि को निर्मित करने, नियमन करने, संहार का महानतम कार्य ईश्वर के द्वारा होता है, अतएव वह परमात्मा भी अति श्रद्धा और आदर का पात्र है। चूँकि वह किसी को दिखलायी नहीं पड़ता, तो फिर उसके प्रति किस प्रकार से आदर प्रगट करें ? स्पष्ट है, कि उस परमात्मा का चित्र अथवा अधिक आकर्षक आधार मानव मूर्ति के रूप में विकसित किया गया । मूर्तियाँ भी कई प्रकार की वस्तुओं से बनायी गयी, जैसे :- मिट्टी, पीतल, लोहा, सप्तधातु (Bronze), लकड़ी, पत्थर आदि ।

**2. साधना का आधार** :- बहुत आदिकाल की बात है, कि जब ऋषि विश्वामित्र ने अपने **शोध मंत्र 'गायत्री'** के माध्यम से यह सुझाया था, कि ईश्वर की प्राप्ति 'ॐ' नाम का जप करने एवम् प्रकाश पर मन को एकाग्र करने से होती है **(भर्गो देवस्य धीमहि)** । तब इस सिद्धान्त को आधार बनाकर नाम + रूप अर्थात् उपाधि को सगुण साकार रूप दिया गया और मानव चित्रों तथा मानव मूर्तियों का निर्माण किया गया। यह प्रयोग मानव मन के विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान के सिद्धान्त के अनुकूल साबित हुआ तथा ईश्वर के निराकार रूप की अपेक्षा यह साकार रूप अत्यन्त सरल तथा जनप्रिय सिद्ध हुआ, **क्योंकि मूर्तियों द्वारा निर्मित मनोहारी रूप सौन्दर्य के कारण मन को एकाग्र करना सरल** बन पड़ा । इस प्रकार के प्रयोग का जनसाधारण ने हृदय से स्वागत किया और ईश्वर उपासना का यह एक प्रिय साधन भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया गया । भगवान श्री कृष्ण ने **भी सगुण-साकार उपासना विधि की ही वकालत की है** । *(गीता-१२/२)*

इस सगुण-साकार उपासना पद्धति के सिद्धान्त की भारी बहुमत से स्वीकृति के कारण ही वेद के अन्य पाँच बड़े-बड़े सिद्धान्तों के पश्चात् इसे छटवें स्थान पर शामिल कर लिया गया और गायत्री को वेद माता के नाम से गौरव प्रदान किया गया । वेद के पाँच बड़े-बड़े सिद्धान्त निम्न प्रकार से हैं :- **1.** कर्म का सिद्धान्त **2.** यज्ञ का सिद्धान्त **3.** पुनर्जन्म का सिद्धान्त **4.** लोक-परलोक **5.** निर्गुण-निराकार उपासना अर्थात् एकेश्वरवाद और **6** वाँ बना सगुण-साकार उपासना अर्थात् अनेकेश्वरवाद ।

**3. वैज्ञानिक आधार** :- पिछली शताब्दी में तार (Telegram) की भाषा बिन्दु (dot) रेखा (dash), जिसे Morse Code कहा जाता है, के द्वारा देश-विदेश में संदेश भेजे जाते थे । आज शून्य **(zero)** एवम् एक **(one)** इन दो चिह्नों के द्वारा कम्प्यूटर नाम की मशीन ने पूरे विश्व में सूचना तकनीक का विस्फोट कर दिया है । बुद्धिजीवी वर्ग को यह बात ठीक से समझनी होगी, कि कम्प्यूटर चिप में शून्य तथा एक के चिह्नों की क्रियाशीलता इलेक्ट्रोन **(Electron)** के कारण होती है, न कि स्वयम् चिह्नों के कारण । इसी प्रकार मूर्ति में भी प्राणों का स्पन्दन साधक की भावना द्वारा उत्पन्न ध्यान सिद्धि से होता है, न कि स्वयम् मूर्ति से ।

बीजगणित (Algebra) में a, b, c, x, y, z आदि चिह्नों की भाषा द्वारा बड़ी से बड़ी गणित की कठिन समस्याओं को हल कर लिया जाता है । इसी तरह Differential और Integral Calculus द्वारा भी ऐसे ही संकेतों से बड़े-बड़े असमान क्षेत्रों का क्षेत्रफल, घनफल और भी अनेक गणित की समस्याओं को हल कर लिया जाता है । रसायन-शास्त्र (Chemistry) हो अथवा भौतिक-शास्त्र (Physics) सभी विज्ञान की शाखाओं में C, H, N, O आदि चिह्नों का खुलकर प्रयोग किया जाता है तथा इन चिह्नों द्वारा बड़ी-बड़ी खोजों को आधार मिलता है । $\mathbf{E = mc^2}$ भी उन महान खोजों में एक है, जिसका अर्थ है, कि पदार्थ तथा शक्ति आपस में रूपान्तरित होते रहते हैं।

किसी नदी की चौड़ाई हो अथवा पहाड़ की ऊँचाई, तारों की दूरी आदि सभी Trignometry द्वारा गणित कर लिए जाते हैं । यह सब चमत्कार गणित में प्रयोग किए जाने वाले चिह्नों का है । इस बात का महत्व भारत के मनीषियों ने ठीक से अनुभव किया, कि मानव जीवन की अनेक मूलभूत समस्याओं को हल कर सकने में चिह्न सहायक हैं । इस सिद्धान्त की खोज को भारतीय चिन्तकों ने ईश्वर प्राप्ति में भी सफलता पूर्वक प्रयोग किया और चित्र तथा मूर्तियों का निर्माण इसी सिद्धान्त की परिणिति है ।

**चिकित्सा विज्ञान का समावेश** :-

**(अ) मानसिक उपचार (Psycho Therapy)** :- चूँकि सभी शारीरिक व्याधियों का सूत्रपात मन के उद्वेलन से ही आरम्भ होता है अतएव मानसिक उपचार को प्राथमिकता दी गयी । इसीलिए मनोद्वेगों के प्रवाह की दिशा को प्रेम एवम् भक्ति की ओर मोड़ने का प्रयास किया गया और चूँकि हर व्यक्ति अपने प्रियजनों से ही प्रेम कर सकता है अतएव मानव मूर्तियों का निर्माण किया गया तथा भक्त को उस परमात्मा से मालिक, पिता, माता, सुहृद, पुत्र आदि का सम्बन्ध स्थापित करने की सीख दी गयी । इस प्रकार मानव मूर्ति प्रेम करने का ठोस आधार बनी । इसे भक्ति के नाम से जाना गया । ध्यान प्रक्रिया में भक्ति बहुत आवश्यक है ।

**(ब) रंगों द्वारा उपचार (Chromo Therapy)** :- भौतिक विज्ञान में बतलाया गया है, कि श्वेत प्रकाश में VIBGYOR नाम से सात रंग होते हैं । इन सातों रंगों की अपनी-अपनी अलग Frequency होती है, इसी के अनुरूप ही वह देवता उतना ही अधिक अथवा कम शक्तिशाली होता है । नीचे हर देवता का रंग तथा अलग-अलग Frequency दिए गए हैं ।

| | *Deity* | *Colour* | *Frequency Cycles per second* | *Postion and Name of Chakras* |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Brahm (ब्रह्म) | Violet (श्याम) | 790-680 x $10^{12}$ | Cerebral Cortex (सहस्रार) |
| 2. | Param Tattva (आकाश तत्त्व) | Indigo (नील) | 680-670 x $10^{12}$ | Vocal Region (विशुद्ध) |
| 3. | Vishnu (विष्णु) | Blue (नीला) | 670-610 x $10^{12}$ | Blader Region (स्वाधिष्ठान) |
| 4. | Ganesh (गणेश) | Green (हरा) | 610-540 x $10^{12}$ | Centre of Forehead (above Pitutory) (आज्ञा) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 5. Shakti (दुर्गा) | Yellow (पीत) | 540-510 x $10^{12}$ | Lever and Dudonum area (Solar Plexus) (मणिपुर) | |
| 6. Hanuman (हनुमान) | Orange (नारंगी) | 510-460 x $10^{12}$ | Heart Region | (अनाहद) |
| 7. Bhairav (भैरव) | Red (लाल) | 460-390 x $10^{12}$ | Coccyx | (मूलाधार) |

भगवान शिव का रंग तेजोमय श्वेत है, क्योंकि श्वेत रंग में सभी रंग समाए हुए हैं, इसीलिए ये महेश्वर अर्थात् सभी देवताओं के ईश्वर हैं । जिस रंग की फ्रीक्वेन्सी **(Frequency)** जितनी ऊँची है, उतना ही वह देवता अधिक शक्तिशाली है तथा अधिक मन: शान्ति तथा शक्ति का दाता है । इन रंगों सहित देवता पर ध्यान करने से सुषुम्ना पर स्थित चक्र प्रभावित होते हैं तथा अन्तर्ग्रंथियों **(Endocrineglands)** से जीवन रसों **(Harmones)** का संतुलित स्राव होकर शारीरिक एवम् मानसिक स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ सांसारिक मनोरथों की पूर्ति भी होती है ।

**4. निराकार बनाम साकार साधना पद्धति** :- ईश्वर के बारे में हजारों वर्षों से मानव जाति में एक बड़ी भ्रान्ति पनपती रही है और उस भ्रान्ति के फलस्वरूप हजारों-लाखों तथाकथित पण्डित वाद-विवाद करते आए हैं, कि **ईश्वर तो निराकार है, उसे सगुण-साकार** मानना भूल ही नहीं, वरन एक गहरी भ्रान्ति भी है, इससे ईश्वर प्राप्ति सम्भव नहीं है । कुछ धर्मों की सोच है, कि ईश्वर के मानने की आवश्यकता ही नहीं है । मात्र अहिंसा, करुणा, प्रेम आदि सद्गुणों से मानव समाज का कार्य सुचारु रूप से चल सकता है । इस प्रकार ईश्वरवादी बनाम निरीश्वरवादी तथा निराकारवादी बनाम साकारवादियों के बीच वाद-विवाद कट्टरता की हर सीमा लाँघता गया और समय-समय पर भयंकर खूनी संघर्षों की घटनाऐं भी होती रही और आज भी हो रही हैं । ऋषि वशिष्ठ तथा ऋषि विश्वामित्र के बीच संघर्ष की प्राचीन कथा का सार भी निराकार बनाम साकार उपासना के सिद्धान्त के संघर्ष की कथा ही है, जिसकी अन्तिम परिणिति हुई वशिष्ठ द्वारा विश्वामित्र के सिद्धान्त को मान्यता दिए जाने से अर्थात् उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि से अलंकृत करके विवाद का सुखद पटाक्षेप हुआ । परन्तु उस समय के पटाक्षेप और वैज्ञानिकता को समय-समय पर लोग भूलते रहे और चुनौती देते रहे, परिणामस्वरूप बार-बार विवाद में फँसते रहे तथा आज भी खूनी संघर्ष में लिप्त हैं । मुस्लिम तथा ईसाई धर्म वाले मूर्ति पूजा की वैज्ञानिकता को न समझ पाने के कारण ही व्यर्थ का संघर्ष कर रहे हैं । इस प्रकार विश्व में अज्ञान तो फैल ही रहा है, साथ में मानव जाति का भारी अहित भी हो रहा है ।

**5. हिन्दुओं में अन्तर्विरोध** :- हिन्दुओं में भी कुछ पन्थ ऐसे हैं, जो मूर्तिपूजा को ठीक नहीं मानते और कट्टरता के कारण विद्वेष फैलाने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहते हैं । वास्तव में, ईश्वर तो निराकार ही है, परन्तु निराकार पद्धति से ईश्वर उपासना कर सकने वाले लोग जो ध्यान साधना करके समाधी अवस्था तक पहुँच जाएं, बहुत ही थोड़े हो सकते हैं अतएव बच्चों के पाठ्यक्रमानुसार 'क' से कबूतर 'ख' से खरगोश, का ठोस आधार देकर जन साधारण की सुविधा हेतु ईश्वर उपासना को सरल बनाने का यह एक सफल प्रयास रहा है । जब ध्यान साधना इतनी प्रगाढ़ हो जाय, कि बाहरी चित्र अथवा मूर्ति की सहायता की आवश्यकता ही न रहे, तब फिर समाधी अवस्था पर पहुँचे साधक के लिए मूर्ति निरर्थक हो जाती है । यह बात यदि ठीक से समझ ली जाय, कि मूर्ति भगवान नहीं है, बल्कि श्रद्धा भक्ति की उत्प्रेरक है और ध्यान साधना में सहायक है, तब फिर विद्वेष का कोई कारण नहीं बचता ।

कई देशों की सरकारों समेत लाखों लोग निराकारवादी बनाम साकारवादी संघर्ष में पूरे मानव समाज की ऊर्जा को नष्ट करने में लगे हुए हैं तथा उग्रवाद एवम् आतंकवाद द्वारा मानव जाति का उत्पीड़न करना उन्हें सार्थक लगता है । स्थायी विश्व शान्ति हेतु धर्म में वैज्ञानिकता के मुद्दे पर संयुक्तराष्ट्र की विशेष समिति द्वारा बहस की जानी चाहिए तथा विज्ञान द्वारा जो सिद्ध हो सके सिर्फ उन्हीं विचारों को मान्यता देकर एक विश्व धर्म की स्थापना होनी चाहिए । यह सोच सही नहीं है, कि धर्म तो मात्र विश्वास का विषय है । नहीं नहीं ! धर्म की पूरी तरह से विज्ञान द्वारा व्याख्या की जा सकती है । वैदिक धर्म की विशेषता है, कि जन साधारण हेतु धर्म की उपासना पद्धति विश्वास पर आधारित है, परन्तु ज्ञानी एवम् विज्ञानियों के लिए शुद्ध उपनिषिदिक ज्ञान की व्यवस्था है, जिसे पूर्ण रूप से वैज्ञानिक भाषा में परिभाषित किया जा सकता है । इस पद्धति में मूर्तिपूजा की आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त नये विद्यार्थी से लेकर उच्च कोटि के विद्वान के लिए अलग-अलग उपासना विधियाँ नियत की गई हैं, ताकि हर बौद्धिक स्तर के व्यक्ति को विकास करते हुए ईश्वर तक ले जाया जा सके । खेद का विषय है, कि आज इस तरह की सीमा रेखाओं के सम्बन्ध में कदाचित् ही किसी को जानकारी हो ? इस समस्या के पूर्ण समाधान हेतु धर्म में वैज्ञानिकता की शिक्षा हर नागरिक को बचपन से दी जाय, तब सम्भव है, कि विश्व में धर्म से उत्पन्न विद्वेष कम हो सकेगा ।

**6. स्वामी विवेकानन्द और मूर्तिपूजा** :- इसी संदर्भ में एक सत्य कथा इस प्रकार से है, कि अमेरिका से लौटे स्वामी विवेकानन्द खेतड़ी के महाराजा के अतिथि बने । भोजन के पश्चात् महाराजा मूर्तिपूजा की बार-बार आग्रह पूर्वक निन्दा करने लगे । स्वामी जी उनके अनेक शास्त्रीय तर्कों को ध्यानपूर्वक सुनते रहे । अन्त में, स्वामी जी ने उनके ड्राइंग रूम में महाराजा के स्वर्गीय पिताजी की मूर्ति देखकर पूछा, कि यह मूर्ति किसकी है, तो महाराजा ने बतलाया, कि यह मूर्ति उनके पिताजी की है । इस पर स्वामी जी ने उनके हाथ में एक जूता देते हुए पूछा, कि क्या वे उस मूर्ति पर जूता मारना पसन्द करेंगे ? इस पर महाराजा क्रोधित हो उठे, तब स्वामी जी ने पलट कर कहा, कि यह तो कलाकृति है, आपके पिताजी तो नहीं हैं, फिर संकोच क्यों ? इस पर महाराजा निरुत्तर हो गये और उन्हें समझ आ गया, कि मूर्ति से श्रद्धा और भक्ति को प्रेरणा मिलती है । साकार चित्र अथवा मूर्ति स्वयम् पिताजी न होते हुए भी आदर के योग्य है तथा ध्यान उपासना के लिए सहायक भी । इस प्रकार स्वामी जी ने सरल से सरल भाषा में महाराजा को मूर्ति पूजा का रहस्य समझा दिया । आइए, हम सब भी समाज के उन लोगों को जन साधारण की भाषा में स्वामी जी द्वारा दी गयी शिक्षा तथा विज्ञान की भाषा में भी संदेश देने का प्रयास करें, ताकि समाज में जो गम्भीर मतभेद बने हुए हैं, वे दूर हों और सर्वत्र शान्ति की स्थापना हो सके ।

ॐ शुभम् भूयात्

**कृपया अपने विचारों से अवगत कराएं, धन्यवाद !**

*इंजी०/डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता (तन्मय)*

# "IDOL WORSHIP"– A SCIENTIFIC ANALOGY

**1. Basis of Shraddha :-** Since ages, the practice to make pictures or idol of some V.I.P., king, great leader, prophet, Guru etc. had been in vogue. The masses reverred them through these symbols as they had been the great and noble souls of the society. Doubtlessly the idol is not the specific person, but being the copy of that person had been considered worthy of reverence. This is because it was the easiest method to offer their Shraddha. Similarly the God, who is creator, operator & destroyer of this universe was also considered worthy of reverence. As the God is formless and could not be seen through naked eyes, hence the easiest way was to revere Him through artful symbols i.e. beautiful idols well decorated in human form.

**2. Basis of Sadhana :-** The matter goes back to very ancient times, when Rishi Viswamitra discovered, that the God could be realised through the practice of japa of the word 'OM', the natural name of God and by concentrating on the light **(Bhargo Devasya Dheemahi)**. The Rishi then projected this principle through 'Gayatri Mantra'. Based on this principle, the method of combining the name and form was accepted for the purpose of Sadhana. This laid the foundation of Saguna-Saakar upasana, which finally led to the formation of well decorated artful idols in human form. This attracted the masses and hence was warmly welcomed because this proved to be the simpler method of worship and to realise God. **Lord Krishna has also advocated for Sagun Saakar upasana.** *(Geeta 12/2)*

Henceforth this principle of Saguna Saakar upasana was incorporated as the sixth fundamental principle of Vedas, besides the other five mentioned hereunder :- **1. Law of Karma 2. Law of Yajna 3. Law of re-incarnation 4. Law of Lok-Parlok 5. Nirguna-Nirakar upasana or Ekeswarvaad. The sixth one added was Saguna-Saakar upasana or multi God principle (Anekeswarvaad).**

**3. Scientific Basis :-** During the last millennium world wide messages were sent through telegraph, where dot and dash symbols were used to convey the thoughts. This method was known as 'Morse Code'. Now in the new millennium symbols of zero and one used in Computers have brought about the revolution in the information technology. **All intellectuals of the society have to understand this fact very clearly, that the symbols of zero and one only effective due to energy of Electron. Similarly, the phenomenon of energisation in the idol is because of concentrated mind and not because of the idol.**

In Algebra, the symbols - a, b, c, x, y, z etc. are used to solve very difficult mathematical problems. In differential and Integral calculus as well, the use of symbols helps in calculating the areas and volumes of irregular shapes. In Physics as well as in Chemistry, the symbols e.g. C.H.N.O. etc. are freely used. The symbols have also provided solid base for great discoveries e.g. $E = mc^2$, which means energy and matter are inter convertible.

To measure the height of some mountain, distance of any star or width of a river, all these are calculated with the help of trignometry. These miracles are due to symbols only. This fact was well understood by the Indian scientists, who realised that several fundamental problems of life can be solved with the help of symbols. **Indian scholars thus used this knowledge to solve the most difficult puzzle of life – The "God" and the formation of idols or pictures of God was the result of this invention only.**

**Integration of Therapies :-**

**(a) Psycho-Therapy :-** Since all diseases of human body emanate from the emotional disturbances, hence this therapy was given priority. Efforts were made to diverse emotions towards love to God. Since we normally love to our kith and kin, hence idols of deities were designed into human form and we were taught to relate ourselves with Him as our Lord, father, mother, brother, friend, son etc. This is how, the idol became a solid base to love God. This is known as Bhakti and is very helpful during meditation.

**(b) Chromo-Therapy :-** There are seven colours in white light known in Physics known as 'VIBGYOR'. All these colours have different frequencies. Accordingly, each diety is more or less powerful also. The colour and frequnecy of diety is given hereunder.

| | *Deity* | *Colour* | *Frequency M. per second* (cycles) | *Postion and Name of Chakras* |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Brahm (ब्रह्म) | Violet (श्याम) | 790-680 x $10^{12}$ | Cerebral Cortex (सहस्रार) |
| 2. | Param Tattva (आकाश तत्व) | Indigo (नील) | 680-670 x $10^{12}$ | Vocal Region (विशुद्ध) |
| 3. | Vishnu (विष्णु) | Blue (नीला) | 670-610 x $10^{12}$ | Blader Region (स्वाधिष्ठान) |
| 4. | Ganesh (गणेश) | Green (हरा) | 610-540 x $10^{12}$ | Centre of Forehead (above Pitutory) (आज्ञा) |
| 5. | Shakti (दुर्गा) | Yellow (पीत) | 540-510 x $10^{12}$ | Lever and Dudonum area (Solar Plexus) (मणिपुर) |
| 6. | Hanuman (हनुमान) | Orange (नारंगी) | 510-460 x $10^{12}$ | Heart Region (अनाहद) |
| 7. | Bhairav (भैरव) | Red (लाल) | 460-390 x $10^{12}$ | Coccyx (मूलाधार) |

Lord Shiva has been assigned radiant white colour. It circumscribes all seven colours and so He is the lord of all deities. **Higher the colour frequency more peace invoking and powerful is the deity. The**

**meditation on these colours effects all the seven Chakras (plexus) on the spinal cord and regulates the harmonal secretion. This results into acceleration of physical & mental health and also the fulfilment of worldly desires of Sadhaka.**

**4. Niraakar v/s Saakar Sadhana Methodology :-** Since ages, there has been great confusion about God, whether He is formless (Niraakar) or of some form. As a result, the so-called Pandits have constantly been arguing, that God is formless and to worship Him in some form is not only fundamentally wrong, but also that He thus can never be realised. Some religions argue, **that it is not at all necessary to accept the existence of God and only by practising love (Prema), compassion (Karuna) and non-violence (Ahimsa), the human society can do excellently well.** Thus Theists v/s Atheists and idol worshippers v/s non-idol worshippers have been debating their view points to the extent of extreme violence and also bloody wars at times. The story of tussle between Rishi Viswamitra and Rishi Vashishtha, is a story of struggle between the Nirguna-Niraakar upasana v/s Saguna-Saakar upasana. This struggle met the happy end, when Rishi Vashishtha decorated him with Brahma Rishi title as a mark of recognition of his **'Thesis'** on Saguna-Saakar upasana enshrined in **'Gayatri'**. Inspite of this fact, people at various times went on raising their doubts and argued on time and again resulting in serious violence. This struggle is going on even today.

**The followers of Muslim and Christian religions are not able to understand the scientific analogy of idol worship and therefore are engaged in unnecessary violence due to fundamentalism.** Thus, they are not only spreading ignorance, but also causing great loss to the human values.

**5. Contradiction amongst Hindus :-** There are sects amongst Hindus as well, who do not agree with idol worship and thus engage themselves in spreading hatred. No doubt, the God is formless, but how may Sadhakas can really practice and realise God through Niraakar upasana, is a million dollar question. Therefore considering easier course as for primary children - 'A' for apple and 'B' for boy, an idol has been devised as a solid base for better and quick comprehension and Sadhana. This method has generally been found successful for all beginners. For a Sadhaka reaching 'Samadhi' state, the idol becomes meaningless. If the fact, that the idol is not God, **but is inspirer of Shraddha and Bhakti and is helpful in meditation, then no reason for hatred is left out. Millions of people including Governments of several nations are engaged in the struggle of Niraakar v/s Saakar methodology.** Thus the valuable vital energy of Mankind is unnecessarily being wasted. This has given birth to terrorism and these terrorists, while torturing idol worshippers feel themselves justified and happy.

**For lasting world peace, the issue of idol worship should be discussed by the special committee of the united nations.** Whether there is adequate scientific support to this methodology. All debatable issues of world religions thus should be examined and the laws, which stand to the test of Science should be incorporated into an unified world religion. **This is not entirely correct, that Religiion is only the matter of faith. No, No, the truth is opposite and that the entire religious issues can be explained in terms of modern science. It is the speciality of Vedic religion only, that a seperate upasana methodology has been designed for General masses based on 'FAITH', whereas for Gyanis (scholars) and Vigyanis (scientists), The upnishidic knowledge is prescribed, which can bè fully analysed in terms of modern science. In this case, idol worship is not necessary. In fact there are upasana methods prescribed for all levels of people right from beginners to scholars. Alas ! these demarcation lines are now lost and is hardly known to any body. To solve the issue of hatred amongst religions once for all, in the whole world, the scientific education of religion should be imparted to every citizen right at school level.**

**6. Swami Vivekanand and idol worship :-** On return from U.S.A., Swami Vivekanand stayed with the Maharaja of Khetri state, in Rajasthan. The Maharaja after lunch delivered a long lecture supported by scriptural dogmas against idold worship and started condemning Hindus. Swami ji heard him very patiently and at the end, he on seeing a bust in the drawing room, asked whose idol was that ? The Maharaja informed, that the idol was of his late father. On hearing this, Swamiji gave a shoe in Maharaja's hands and asked whether he would prefer to beat the idol with shoe. On this proposal, the Maharaja became furious. Swamiji then retorted, that the idol was not his father but an earthen statue only, then why to shirk ? This left Maharaja blank. Maharaja thus realised, that the idol even though was not his father, but was the inspirer of Shraddha and Bhakti. Thus Swamiji in most simple terms explained the Maharaja 'the mystery of idol worship'.

Let us also explain the masses in simple terms as exemplified by Swamiji and also convey the message in terms of science to the intellectuals, so that the confusion and contradiction prevailing amongst Hindus and others are removed and peace may prevail all around.

*Om Shanti ! Om Shanti ! Om Shanti !*

***Kindly send your views, Thanks !*** Eng./Dr. Avadh Behari Lal Gupta *(Tanmaya)*

Er./Dr. Tanmaya
A.M.I.E. (India)
Executive Engineer (Retd.)
CONSULTANT HOMOEOPATH
Exponent of Vedic Philosophy
Founder of Science & Spirituality
Co-ordination Federation

श्री सनातन धर्म सभा (पंजीकृत)
शिव मन्दिर, लोक विहार, दिल्ली–११००३४

Gayatri Dham
B-340, Lok Vihar,
Pitam Pura, Delhi-110034
Ph. : 7184145

DELHI, Dt. .....2000

# SCIENTIFIC ANALYSIS OF VEDIC PHILOSOPHY

***Dear Sir/Madam,***

Enclosed kindly find **scientific articles** listed below for your benevolent approval. Since you are a well known scholar of various religions including Hindu Philosophy, therefore, I shall feel highly obliged, if you could kindly go through **the articles and send me your critical views and suggest improvements, if any.**

**Sir, it is an era of Science** and in accordance with the vast knowledge inherent in you, it is possible to work out a formulae to project Hinduism at the world forum as a perfect, natural and hence **'Supreme Dharma'**, you may Sir, agree, that Hinduism should ultimately stand out as a **universal 'Dharma', if proved scientifically.** I am of the firm conviction, that the entire 'Hindu Dharma' is possible to be proved as totally based on science and so a debate should be initiated at the parliament level and carried upto UNITED NATION to formulate a common Dharma. You will Sir, get convinced with my view point, **provided you throw away the armour (कवच) of Literature and Arts enwrapping the entire writings of our scriptures, right from vedas upto 'Ramcharit Manas'.**

This armour is very charming and sweet, like the juice and pulp gripping the small tiny seed of a grape. *(कृपया सत्यम् शिवम् सुन्दरम् लेख को देखें)* During the recent decades, we have gathered strong **'Samskars'** of specific type of teachings, which we have been passed on to us as a rich heritage. **But such approach had been entirely by the scholars of Arts and Literature.** Thus, naturally they were more or less **charged with emotions and sentiments exagerated in many ways and projected the vedic knowledge as occult and mysterious.** My view would look prima facia as silly and unconvincing. Thus you may like to shoot out some hard objections, which if brought to my notice shall be replied. Otherwise also, I am foreseeing some possible questions, the answers of which shall come up in my future articles now in hand. However, your serious objections, will inspire me and prove as magnetic compass to our journey in placing **'Bharat' as a world teacher once again. There is now urgent need to do so, to mitigate the charge of communalism imposed on Hindus in the parliament every now and then.** Thus, it is the duty of every Hindu to rise to the occasion and assert the truth boldly as the **Hindu Dharma is fully based on science.**

**I solicit your blessings and active cooperation for publicising these ideas through all available media and take up the matter to the parliament and upto world forum for discussion.**

*With warm regards,*

*Sincerely yours*

**List of Scientific articles :-**

Er./Dr. Avadh Behari Lal Gupta *(Tanmaya)*

१. "ॐ का प्रादुर्भाव - एक वैज्ञानिक दृष्टि २. प्रश्नोत्तरी (गायत्री मंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या) ३. सत्यम् शिवम् सुन्दरम् - एक वैज्ञानिक दृष्टि ४. प्रतीक विज्ञान - (भाग-१) ५. "क्या हिन्दू एवम् हिन्दू संगठन कट्टर तथा सम्प्रदायवादी हैं ?" ६. "मूर्तिपूजा" एक वैज्ञानिक मीमांसा ७. सम्प्रदायवाद के मूल कारण और समाधान ८. प्राण - विज्ञान के शब्दों में ९. रेकी-चिकित्सा विज्ञान १०. सृजन से विलय तक - एक विहगम दृष्टि ११. माया से मोक्ष तक - एक आधुनिक व्याख्या १२. यज्ञ (निष्काम कर्म) १३. समाज सेवा - एक वैज्ञानिक समीक्षा १४. रामचरितमानस में राष्ट्र प्रेम १५. उपास्य देवों की वैज्ञानिक व्याख्या १६. शक्तियों का मूर्तिकरण १७ चरित्र निर्माण के वैदिक सूत्र १८. हिन्दुत्व बनाम सेक्युलरिज्म तथा आत्म-विवरण ।

| | | |
|---|---|---|
| Author of | : | Internationally Famous Thesis on Homoeopathy<br>Scientific Papers on Scriptures e.g. Gayatri, Geeta, Raj & Gyan Yoga etc. |
| Dharam Prachar Mantri | : | Shiv Mandir, Lok Vihar, Pitam Pura, Delhi-34 |
| Executive Member | : | Bharat Vikas Parishad, Lok Vihar Branch |
| Life Member of | : | 'Kalyan' Geeta Press Gorakhpur, 'Yog Manjri' Bhartiya Yog Sansthan |
| Member | : | Agarwal Samaj & Vaishya Panorama |

3/4.3.2000